DCP (L) No F. 2 (P-22) Press / 2014 RNI - DELPRA/2015/59918 ISSN. 2454-5252 Jan - June 2019

णमो जिणाणं

पागद-भासा PĀGADA-BHĀSĀ

प्राकृत-भाषा पाउअ-भासा पाइय-भासा PRAKRIT LANGUAGE

Year-5 | Volume-9 | The First News Paper in Oldest Indian Prakrit Language, Hon. Editor : Prof. Dr. ANEKANT KUMAR JAIN

पागद रट्ठवई-पुरक्कारं-समप्पिदं

णव दिल्ली, असोग होटले उवरट्ठवई महामहिम वेंकटाणयडू महोयेण पागद-रट्ठवई-पुरक्कारां पागद-विउसाणं पदत्तं। 2018 वस्सस्स वरिट्ठ-पुरक्कारं पो. फुल्लचंदो-जइणो तहा जुव पुरक्कारं डॉ. आणंदो जइणो 2017 वस्सस्स वरिट्ठ-पुरक्कारं प्रो. सागरमल-जइणो तहा जुव पुरक्कारं डॉ. सुमण-जइणो, 2016 वस्सस्स वरिट्ठ-पुरक्कारं किदे प्रो. दामोदर सत्थि तहा जुव पुरक्कारं डॉ. जोगेस जइणो सम्माणिदं होसी। पागद-भासा पक्खदो सुहकामणा।

पागद-विउसो पो. रायारामस्स भव्व अभिणंदणं

2, मार्च 2019, णवदिल्ली, कुंदकुंद-भारदी संठाणे, आयरिय विज्जाणंदो तहा आयरिय सुयसायरो साणिज्झे पो. रायारामस्स भव्व अभिणंदणं होसी। अवसरम्मि कुलवई पो. रमेस पाण्डेयो, पो. असोग-जइणो, पो. जयकुमार उपाध्ये, पो. हम्पाणागरज्जैया तहा साहू अखिलेस-जइणो 'पाइय-पुरिसो'-नामगं अहिणंदण-गंथं समप्पिदं। पाइय-भारदी पक्खदो पो. सुसमा-जइणो, पागद-भासा तहा जिणफाउण्डेसण पक्खदो पो. अणेयंत-जइणो, वीरसेवा-मंदिर पक्खदो-डॉ जयकुमार-जइणो, विउसाणं परिसदो पक्खदो डॉ. सुरेंद-भारदी गणेस वणिण संठाण पक्खदो पो कमलेश कुमार तहाय मणीस जइणो सम्माणं किअं। महासहा पक्खदो 'अभिणव-रईधू' उवाहि वि पदाणं किअं।

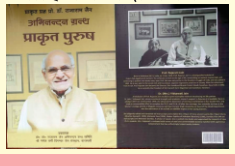

पागद-भासाअ महामत्थगाहिसेस-विसेसंकस्स भव्व-विमोयणं

सवणबेलगोला, सिरी खेत्ते 25/05/2018, बाहुबली-पाइय विज्जापीठं तहा य रट्ठिय-पाइय-अज्झयण तहा सोह संठाणस्स तत्त्वावहाणे पागद-भासाअ महामत्थआहिसेअ-विसेसंकस्स समारोहे भव्व विमोअणं कम्मजोई सत्थि सिरी चारुकित्ती भट्टारग-सामि महोदयेण होसी। डॉ. राजेंद जइणं मंगलायरणं किअं। पढमो अवसरो अत्थि जया पागद-भासाअ संपुण्ण वायणं संठाणस्स विउसाहिं किअं। पंडिय-रमेस-सत्थि सुंदरो पाइय-भासाए संयालणं किअं। भट्टारग-सामि उत्तं - 'महामहोस्सवे 108 गंथ पगासेण गोमटेसस्स अक्खराहिसेगो जाअं, अज्ज पागद-भासाअ विसेसंकस्स पगासेण 'पागदभासाहिसेगो होइ।' अवसरम्मि पागद-भासाअ संवादगो डॉ. अणेयंत-जइणस्स, तहा पगासगो सिरीमई रुई-जइणस्स सम्माणं होसी।

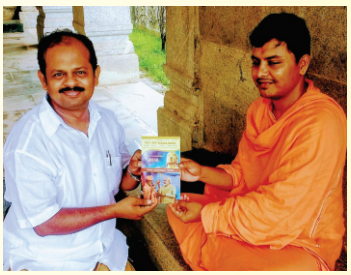

Editorial

पागद-संगीअ-विण्णाणं

पागद-साहिच्चस्स विसाल-परंवरा अत्थि। सव्व विज्जा विहा संपण्णा पागद-साहिच्च अमुल्लो अत्थि। पागद-साहिच्चम्मि संगीअस्स विज्जाए बहु वण्णणं अत्थि। संगीअसत्थस्स सिद्धंतं, सत्त सराणं वण्णणं, तहा अण्ण सिद्धंतस्स वित्थाररुवेण विवेअणं पागद-साहिच्चम्मि अत्थि। अणुओगदाराइं सुत्ते(127) सराअ सुंदरं विवेअणं अत्थि-

सज्जे रिसहे गंधारे, मज्झिमे मे पंचमे सरे।
धेवए चेव नेसाए, सरा सत्त विआहिया ॥

अणुओगदारम्मि सत्तण्हं सराणं सत्त सरट्ठाणा पराणत्ता-

सज्जं च अग्गजीहाए, उरेण रिसहं सरं।
कंठुग्गएण गंधारं, मज्झजीहाए मज्झिमं॥
नासाए पंचमं बूआ, दंतोट्ठेण अ धेवतं।
भमुहक्खेवेण णेसायं, सरट्ठाणा वि आहिआ॥

एवं संगीअस्स तच्चाणं उल्लेओ अत्थि- (सुत्त 127)

सत्त सरा तओ गामा, मुच्छणा इक्कवीसइ।
ताण एगूणपण्णासं, सम्मत्तं सरमंडलं॥

विमलसूरि विरइयं पउमचरियम्मि नट्टं-संगीअणं विसिट्ठं ठाणं दत्तं-

नट्टं सलक्खणगुणं, गंधव्वं सरविहत्तिसंजुत्तं।
जाणइ आहरणविही, चउहव्विहं चेव सविसेसं॥

पउमचरियम्मि पज्ज संखा 84 मज्झे उत्तं जो जिणमंदिरम्मि गीअं-वज्जं तहा नट्टं पुव्वकं भअणं करेइ सो सग्गे देवो भविदूण उत्तमविमाणम्मि वासं करिदूण परममहोस्सवं लभेइ-

गन्धव-तूर-नट्टं, जो कुणइ महुस्सवं जिणाययणे।
सो वरविमाणवासे, पावइ परमुस्सवं देवो॥

अतो पागद-संगीत-सत्थ वि अवस्स पढिअव्वं पआरे य करिअव्वं।

- Prof.Dr. Anekant Kumar Jain
Head- Deptt. of Jain Philosophy
Sri lal Bhadhur Shastri Rashtriya
Sanskrit Vidyapeeth, New Delhi-16

सहायग-गंथा
1. अणुओगदाराइं
2. पउमचरियं-विमलसूरि
3. भारतीय संस्कृति के विकास में --- डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

drakjain2016@gmail.com

Book Review

सम्मुच्छिममणुस्सा :आगमियं सच्चं विसुद्धपरम्परा य

सच्चस्स सोहो पच्चेकस मणूसस्स अंतरतिव्वाहिलासा होइ । बहुहा एवं भवइ, जं - अचच्चस्स छाररासिस्स अहे सच्चस्स जच्चसुवण्णं आवरिज्जड, अदिस्सो इव हवइ। अणेगसयवरिसपज्जंतं अणुसरणमेत्तेण असच्चं सच्चरूवेण ण परिमइ । सेयाम्बर अद्धमागही आगमेसु वण्णियं सम्मुच्छिममणुस्ससाणं विसयगं सच्चं अवि अईयाणेगसईओ अणेगभमेहिं पमाणरहियाहिं य वियारधाराहिं अच्चंलधूमिलं एव न जायं किंतु अदिस्समिव जायं । एरिसे काले बहुस्सुएहिं आयरिपवरेहिं सिरिरामलालमहाराएहीं दढपमाणेहिं सयुयं जिणागमाणं निस्संदरुवं एयं पुत्थयं अम्हाणं समक्खं ठविऊण जिणागमे वुत्तस्य सुद्धिसिद्धंतस्स सुरक्खाए एगं महं कज्जं कयं। एगं पुत्थयं 'सम्मुच्छिममणुस्सा : आगमियं सच्चं, विसुद्धपरम्परा य' एगं एरिस अमुल्लं णिहाणं अत्थि, जम्मि सुत्तरयणेहिं विणिम्मियं सच्चाभूसणो विरायइ । जिणागमसद्धालूणं, सिद्धंतपेमिजणाणं, तत्तरसियाणं, सोहकत्ताणं य कए एयं पुत्थयं णाणवुड्ढिकरं अत्थि एव, सच्चस्स सोहसुविहिनिदरिसगमवि अत्थि।

लेहय -आयरियपवरा सिरिरामलालमहाराया

पिट्ठसंखा	-320
पगासणवरिसो	-जूण, 2018 (ई.स.)
मुल्लं	- रू 500/ (भारहे), 100$ (विदसे)
पगासगो	- साहुमग्गी पगासणो, बीकानेर (राज.)

- Acharya Shri Ramlal Maharaja

पागद अपभंस विउसाणं देहावसाणा

विगय काले तिण्णी पागद-अपभंस-भासाणं साहिच्चाणं य विउसाणं देहावसाणा होसी। नवंबरो 2018काले पाटलिपुत्तस्स सिरिरंजणसूरिदेवो, दिसंबर 2018 काले जयपुरस्स सिरी हरिराम आयरिय तहा य फरवरी 2019 काले पोफेसर णामवर सिंह विउसाणं देहावसाणा होसी। सिरी रंजण सूरिदेवं पागद कहा साहिच्चस्स, सिरि हरिराम आयरिय पागदकव्व साहिच्चस्स तहा नवदिल्ली पोफेसर णामवरसिंह अपभंस-हिंदीसाहिच्चस्स विसेसण्णो आसि।

पागद-भासा पक्खदो सिद्धांजलि

।। मंगलट्ठग थोत्तं।।

अरहंतो भगयंत इंदमहिया, सिद्धा य सिद्धीसरा।
आयरिया जिणसासणोण्णइयरा, पुज्जा उवज्झायगा।
सिरिसिद्धंत सुवाटगामुणिवरा, रयणत्तयाराहगा।
पण्णेदे परमेट्ठिणो पइदिणं, कुव्वंतु णो मंगलं ।।1।।

सिरिमण्णम्म सुरासुरिदं पगड. पज्जोय रयणप्पहा।
भास्सय पायणहिंदवो पवयणांभोहिंदवट्टायिणो।
जे सव्वे जिणसिद्ध सुज्जणुगया, दे पाढगा साहुणो।
थोच्चा जोइजेणेहिं य पण्णगुरवो, कुव्वंतु णो मंगलं। ।2।।

सम्मदंसण वोह वित्तममलं, रयणत्तयं पावणं।
मुतिस्सिरिणयराहिणाह जिणवच्चुत्तोववग्गप्पदो।
धम्मो सुत्तिसुहाय चेइयमहिलं चेइआलअंसिरिआलअं
वुच्चं च तिविहं चउव्विहममी कुव्वंतु णो मंगलं ।।3।।

णाभेयाइ जिणापसत्थयवयणक्खादा चउव्विसइ।
सिरिमंतो भरहेस्सर पभइणो जे चक्किणो वारस।
जे विण्हु पइविण्हु लांगलहरा सतुत्तरा विंसइ।
तिक्काले पहियांत्तसट्ठि पुलिसा कुव्वंतु णो मंगलं ।।4।।

जे सवोसहि रिद्धिणो सुतवसी वट्ठिंगया पण्ण जे।
जेयट्ठंगमहाणिमित्त कुसलच्चट्टाविहच्चारिणो।
पण्णण्णाहरत्तिओ वि बलिणो जे बुद्धिरिद्धीस्सरा।
सत्ते दे सअलच्चिआ मुणियरा, कुव्वंतु णो मंगलं ।।5।।

जोइयविंतर भावणमरगिहे मेरुम्हि कुलद्दम्हिट्ठिआ।
जंबु सम्मलि चेइय साहिसु तहा वक्खार रुणादिसु।
इस्साकार गिरिम्हि अ कुंडल नगे दीवे च णंदीसरे।
सेलेजे मुणओत्तरम्हि जिणघरा कुव्वंतु णो मंगलं ।।6।।

कइलासे वसहस्सण्णिव्वुदिमही, वीरस पावउरे।
चम्पाअं वसुपुज्जसज्जिणवई, सम्मेदसेलम्हि अरिहदां
सेसाणमवि चौज्जअंतसिहरे, णेमिस्सरुसारिहदा।
णिव्वाण्णावणओ पसिद्धविहवा, कुव्वंतु णो मंगलं ।।7।।

सप्पो हारलया हवइ असिलया सप्पुप्फ दामज्जदे।
संपज्जेइ रसाअणं विसमवि, पीइं विहत्ते रिव।
देवा जंति वसं पसण्णमणसो किं वा बहुव्वूमहे।
धम्मादेव णहोवि वस्सदि नगेहिं कुव्वंतु णो मंगलं ।।8।।

जो गब्भावतरुच्छवो भगवदां जम्माहिसेगुच्छवो।
जो जादोवरिण्णिक्कमेण विहवो जो केवलण्णाण भाग।।
जो केवल्लउरप्पवेस महिमा संपादिओ सग्गिहिं।
कल्लाणाणि य ताणि पण्ण सददं कुव्वंतु णो मंगलं।।9।।

इत्थं सिरिजिण मंगलट्ठगमिणं सोहग्ग सपयअरं
कल्लाणेसु महुच्छवेसु सुहिय तित्थंगरणामुसो।
जे सुणवंति पढंति तेहि च सुअणेहिं धम्मत्थ कामाण्णिदा।
लक्खी आसयदे विवायरहियाणिव्वाण लक्खीरवि।।।10।।

।। इदि मंगलट्ठग थोत्तं।।

- Dr.Ramesh Chand Jain
(Prakrit Conversion)

गिरणार-वंदणा

णेमिणाहं वंदमि गिरणारं रेवयं वा उज्जंतं।
सिद्धाणं सिद्धधरं मणवचकायेण वंदामि।।१।।

अर्थ-नेमिनाथ भगवान को वंदन करता हूँ । गिरनार,रैवतक अथवा ऊर्जयंत पर्वत सिद्धधरा व सिद्धों को मन वचन काय से वंदन करता हूँ।

पंचकूडेहिजुत्तो हरि-हरिणादि गादि संभरिदो।
गिर रण्णेणावित्तो तम्हा गिरणार पासिद्धो ।।२।।

अर्थ- पंचकूटों से युक्त सिंह हरिण पक्षी आदि से भरा हुआ गिर नामक जंगल से घिरा होने के कारण गिरनार प्रसिद्ध है।

हरिवंस तिलगरुवा समुद्दविजयस्स सिवाए सप्पुत्तो।
किण्हस्स लहुभाओ णेमिणाहो य अत्थ णिव्वुत्तो ।।३।।

अर्थ- हरिवंश के तिलकरूप समुद्रविजय व शिवादेवी के सुपुत्र, कृष्ण के लघुभ्राता नेमिनाथ यहाँ निर्वाण को प्राप्त हुए हैं।

गब्भजम्मेहि जस्स पुज्जो सोरीपुरणाम सुहणयरो।
दुवारिगा कीलाहि पदणिक्खेवेहिं च परिपूदा ।।४।।

अर्थ- जिनके गर्भ व जन्म से शौरीपुर शुभ नगर पूज्य हुआ था तथा द्वारिका भी क्रीड़ा व पदनिक्षेप से पवित्र हुई।

किण्हस्स पपंचेहिं रचिदो णेमिस्स विवाहसंबंधो।
उग्गसेणस्स पुत्ति-राजुलमयीए राजलच्छीए ।।५।।

अर्थ- कृष्ण के कारण से नेमिकुमार का विवाह संबंध राजा उग्रसेन की पुत्री राजलक्ष्मी राजुलमति के साथ रचा।

पसुकंदणं च सोच्चा वध बंधं पराधीणदं दिट्ठा।
संजादो वेरग्गो तोरण मुच्चा चडेदि गिरणारे ।।६।।

अर्थ- पशुक्रंदन को सुनकर वध बंधन व पराधीनता देकर नेमिनाथ को वैराग्य हो गया और वे तोरण छोड़कर गिरनार पर चढ़ गए।

जूणागढो वि खुविदो हस्सपसंगे विसोगसंजादो।
राजुलमदी वि विलवइ किं जादा णवभवस्स पीदिए।।७।।

अर्थ- जूनागढ़ भी क्षुभित हो गया, हर्ष प्रसंग में शोक फैल गया, राजुलमति भी विलाप करती हुई कहती है कि नवभव की प्रीति का क्या हुआ ?

सेसावणम्मि दिक्खा केवलणाणं सुरिं परिपुज्जो।
पाऊण य णिव्वादो पंचमकूडे य उज्जंते ।।८।।

अर्थ- सेहसावन में सुरेंद्र पूज्य दीक्षा तथा केवलज्ञान प्राप्तकर नेमिनाथ ऊर्जयंत के पाँचवें कूट(टोंक) से मुक्त हुए।

पढमकूडे य राजुलगुहा वि अत्थि जिणालयो उच्चो
विदियकूडे य चरणो तिदिएकूडे दो चरणछतरी ।।९।।

अर्थ- पहली टोंक पर राजुल की गुफा है, ऊँचा जिनालय भी है, दूसरी टोंक पर चरण, तीसरी टोंक पर दो चरण छतरी हैं।

संभू तह अणिरुद्धो पज्जुणादि चडत्थकूडे य।
बाहत्तरि कोडीओ सत्तसया मुणिवरा सिद्धा ।।१०।।

अर्थ- वहाँ से संभू तथा अनिरुद्ध चौथी टोंक से प्रद्युम्नादि तथा बहत्तर करोड़ सात सौ मुनि सिद्ध हुए हैं।

णिम्मलज्झाण केंदो, समवसरणो असोग लेहो वि।
बंडिस्स धम्मसाला चंदगुहा य विधम्मि पाहावो।।११।।

अर्थ- यहाँ निर्मल ध्यान केन्द्र, समवसरण जिनालय, अशोक लेख, बंडी जी की धर्मशाला, चन्द्रगुफा तथा अन्य लोगों का प्रभाव भी है।

- Acharya Sunil Sagar Ji

Year-5 | Volume-9

पागद-भासा PĀGAD-BHĀSĀ

Jan - June 2019

ISSN. 2454-5252

रायस्स गुणा

दाणी सूरो गुणी चागी, णिट्ठावाणे परक्कमी।
दूरदिट्ठा हु गंभीरो, पज्जाणं उवसारि सो ॥1॥
अहिंसगो महाजोद्धा, संतो च वाग संजमो।
सीलो उदार विण्णाणी, अद्दस्सो सो वि भूवदी ॥2॥

अर्थः जो दानी, शूर, गुणी, त्यागी, निष्ठावान्, पराक्रमी, दूरदृष्टा, गंभीर प्रजा का उपकारी, अहिंसक, महायोद्धा, शांत, वाक् संयमी, शीलवान् उदार व विज्ञानी हो वह ही आदर्श भूपति कहलाता है।

देव भत्तो सयायारी, दाणी धारो गुणाकरो।
णिब्बलस्स बलं णिच्चं, णयप्पियो दयालु सो ॥3॥
रक्खगो सव्व साहूणं, सज्जणस्स स गाहगो।
अणुगाहण धम्मीणं, सो राया खलु पंडिदो ॥4॥

अर्थः प्रभु भक्त, सदाचारी, दानी, धीर, गुणों का समुद्र, नित्य निर्बलों को बल प्रदान करने वाला, न्यायप्रिय, दयालु सभी साधुओं की रक्षा करने वाला सज्जनों का ग्राहक, धर्मियों का अनुग्रह करने वाला राजा निश्चय से पंडित है।

सयायारं हु रक्खेज्जा, कयायारं च मुंचदु।
पालएज्ज सुधम्मीणं, अज्जिदुं णाय पुव्वगं ॥5॥
कत्तव्वा सुट्ठु-रायस्स, सव्व धम्मस्स रक्खणं।
वड्ढगो सुगुणा णीदी, पाणी मेत्त हियंकरो ॥6॥

अर्थः राजा को सदाचार की रक्षा करनी चाहिए, कदाचार को छोड़ना, धर्मियों का पालन करना चाहिए एवं न्यायपूर्वक धन का अर्जन करना चाहिए। श्रेष्ठ राजा का कर्त्तव्य सब धर्मो की रक्षा करना है, वह अच्छे गुण और नीति का संवर्द्धन करने वाला हो तथा प्राणी मात्र का हित करने वाला हो। - Acharya Vasunandi Ji

उदयपुरे पाइय-सिक्खण-कज्जसाला संपण्णा

परम पुज्जा अज्जिगा सोभग्गमईमाताजी साणिद्धे भारदीय पाइयविज्जजनसोसायटी एवं जइण विज्जा तहा पाइय विभाअस्स तत्तावधाणे उदयपुरे दसदिवसीय पाइयसिक्खण कज्जसाला सुसंपण्णा। इमम्मि कज्जसालाए आयरियो पेम्मसुमणजइणो, डा. उदयचंदो पो. जिनिंदकुमारो, डा. जोतिबाबूजइणो डॉ. सुमत जइणो विज्जजणेहिं अगादमिगसहयोगं पदत्तं । पहाडाजइणसमाजजणेहिं सव्वं आयोजणं किदं । -Dr. Veer Chand Jain(Udaipur)

पाइय-चच्चासत्तं

रामटेयं, दिणंक-30.03.2019, कालिदाससंस्कृत-विस्सविज्जालयस्स सक्कय-भासा तहा साहिच्चविहाओ 'आगम-पाइय-पयविआ'अंत्तागयत्तेणं 'पाइय-चच्चासत्तस्स' आयोजणं होसी। सत्तस्स अज्झखदा डॉ. लीणा रस्तोगी, विसेसोपात्थिइ डॉ. पराग जोसी किदं। देहली विस्सविज्जालअस्स सक्कय विहागस्स पज्झावओ डॉ. बलरामसुक्लो 'कालिदासपुव्व-उत्तर-सक्कणट्ठ-सुंदेर अहिविड्ढीए पाइय भासाणं जोयदाणं' इइ विसयोवरि विसेसवक्खाणं पदत्तं।

पागदभासाए विवाहणिमंतण पत्तो

ॐ नमः सिद्धेभ्यः णमो जिणाण ॐ श्री पार्श्वनाथाय नमः

मंगल-परिणयोच्छवो

'आसीवाद-समारोहो-पीइभोओ च'

(21 जुलाई 2018)

मण्यवरो,

अम्हे सुपूयो आयुस्माण-डॉ0 अरिहंत-कुमार-जइणस्स तहा आयुस्मइ णेहा-जइणस्स सुह-विवाहोपलक्खस्स मंगलावसरम्मि आयोजिदं आसीवाद-समारोहम्मि वर-बहुणं धम्ममओ-सुहमओ णिहत्थ-जीवणस्स णिय-मंगलमय-आसीवदत्थं तहा य पीइ-भोयम्मि सम्मिलिय-होऊण अणुग्गिण्हामो।

महासहा अजक्खो सिरी णिम्मल सोठिस्स 96 वस्सिय माआअ दिक्खा सल्लेहणा अ

सल्लेहणा
अज्जिका अमरमई
वंदामि

Swastika Jain
Project Manager
D-45 Ground Floor
Shubham Enclave
Paschim Vihar
New Delhi-110063

इंटरनेट-जुगे पागद-भासा अहोलिहिदलिंकम्मि वि उवलद्धा अत्थि-

फेसबुग-सुत्तं : https://www.facebook.com/pages/Prakrit-Language-and-Literature/376483559110083?ref=hl

Group - https://www.facebook.com/groups/prakritlanguage/

ब्लॉगसुत्तं : http://prakritlanguage.blogspot.in/

संपक्क-सुत्तं : pagadbhasa001@gmail.com, +91 9711397716

TITLE - PAGAD BHASHA,
RNI - DELPRA/2015/59918, ISSN. 2454-5252
DCP (L) - NO. F.2 (P-22) PRESS/2014
LANGUAGE OF THE NEWS PAPER - PRAKRIT
PERIODICITY - HALF YEARLY
PRICE - FREE OF COST DISTRIBUTION

Printed Matter Posted Under P&T Guide Sec. 114(7)

To

.....

.....

.....

.....

.....

.....

STAMP

If undelivered please return to-
JIN FOUNDATION, Behind Nanda Hospital, A93/7A, Chattarpur Extension, New Delhi-110074

Declaration As Per Rule

Printed, Published and owned by **Ruchi Jain** and printed at Sonu Printing Press, Munirka, New Delhi-67 and published at **JIN FOUNDATION, A93/7A, Chattarpur Extension, New Delhi-110074,** Editor - **Dr. Anekant Kumar Jain.**